हवाई जहाज़ के आविष्कारक

विल्बर और ओरिविल राईट

जॉनसन, हिंदी : विदूषक

हवाई जहाज़ के आविष्कारक

विल्बर और ओरिविल राईट

हवाई जहाज़ के आविष्कारक

विल्बर और ओरिविल राईट

यह कहानी उन दो भाइयों की है
जिन्होंने बड़ी मेहनत, सब्र और लगन
से हवाई-जहाज़ का अविष्कार किया.

एक ज़माने में दो सगे भाई थे - विल्बर राईट और ओरिविल राईट.

एक दिन दोनों भाई अपने दोस्त जिमी के साथ खेल रहे थे. वो अपने खिलौने रखने के लिए एक छोटा सा घर बना रहे थे. उन्हें चीज़ें बनाने में बहुत मज़ा आता था. उनके पिता कहीं बाहर गए थे. वे पिता के आने का इंतज़ार कर रहे थे.

“यह एक नया खिलौना है,” मिस्टर राईट ने कहा.

“जब तुम उसे हवा में फेंकोगे, तब वो उड़ेगा.”

“सच में?” विल्बर ने आश्चर्य में कहा.

“क्या हम उसे उड़ा सकते हैं?” ओरिविल ने पूछा.

“क्यों नहीं,” पिताजी ने उत्तर दिया.

“अक्सर पिताजी हमारे लिए कोई नया खिलौना लाते हैं,” विल्बर ने कहा.

“मुझे पिताजी के कदमों की आवाज़ सुनाई दे रही है,” ओरिविल ने कहा.

“वो तुम्हारे लिए एक नया खिलौना लाए हैं,” जिमी ने मिस्टर राईट के हाथ में उपहार देखकर कहा. “पर यह तो बड़ा अजीब सा उपहार है!”

“यह क्या है, पिताजी?” दोनों राईट भाईयों ने पूछा.

“यह खिलौना, एक छोटी चिड़िया जैसा है,”
मिस्टर राईट ने कहा. फिर उन्होंने उसे हवा में उछाला.

खिलौना घूमता हुआ, उड़ता हुआ कमरे की छत
की तरफ गया.

वो वाकई में एक चिड़िया जैसा था – पर बिल्कुल छोटी
चिड़िया जैसा.

जब वो छत से टकराया, तब बताओ क्या हुआ?

बिल्कुल सही. छत से टकराने के बाद वो फर्श पर आकर गिरा.

राईट भाईयों को खिलौने का फर्श पर आकर गिरना बिल्कुल अच्छा नहीं लगा.

“वो उड़ता ज़रूर है, पर बहुत अच्छी तरह से नहीं,” लड़कों ने अपने दोस्त जिमी से कहा.

मिस्टर राईट मुस्कुराए. “इसे दुबारा फेंकों,” उन्होंने कहा. “शायद वो इस बार हवा में कुछ ज्यादा देर मंडराए?”

उसके बाद दोनों भाईयों ने खिलौने को हवा में दुबारा उछाला. इस बार खिलौना उड़कर कमरे के बाहर चला गया.

“यह उड़ता है! यह वाकई में उड़ता है!” दोनों भाई चिल्लाए.

“वाह!” जिमी भी चिल्लाया.

वैसे तो वो बस एक खिलौना था. पर उसने राईट भाईयों को एक बेहतरीन आईडिया दिया.

दोनों भाई इतने खुश हुए कि उन्होंने सपने देखना शुरू कर दिए.

तुम्हें पता है कि उन्होंने क्या सपना संजोया?

“कल्पना करो कि अगर वो खिलौना एक बड़ी उड़ने वाली मशीन जैसा होता,” दोनों राईट भाईयों ने सोचा.

“सोचो, अगर वो हवा में काफी देर उड़ता, तब हम उसमें बैठकर उसे बाएं-दायें ले जा सकते थे. फिर हम जहाँ चाहें वहां पर उड़कर जा सकते थे. तब हम पेड़ों और छतों के ऊपर उड़ सकते थे.”

उन्हें पता था कि वो महज़ एक सपना था. उस ज़माने में लोग गर्म हवा के बड़े गुब्बारों में बैठकर हवा में उड़ सकते थे. या फिर कुछ दूरी के लिए ग्लाइडर में उड़ सकते थे. पर तब तक किसी ने भी असली उड़ने वाली मशीन का इजाद नहीं किया था.

“कभी भी कोई असली उड़ने वाली मशीन नहीं बना पाएगा,” राईट भाईयों ने दोस्त जिमी ने हँसते हुए कहा. “ज़रा उसे देखो!”

तभी वो खिलौना फिर से ज़मीन पर आकर गिरा.

“पर वो तो सिर्फ एक खिलौना है,” ओरिविल ने कहा.

“अगर हमने एक असली उड़ने वाली मशीन बनाई .....” विल्बर ने कहा.

“तुम ऐसा कभी नहीं कर पाओगे,” जिमी ने कहा. “तुम यह बेकार की बातें कर रहे हो. उन्हें सुनते-सुनते मैं बोर हो गया हूँ. मैं अब अपने घर वापिस जा रहा हूँ. वहां मैं अपने खिलौनों से खेलूंगा.”

उसके बाद जिमी वहां से चला गया.

राईट भाई शायद जिमी की बात सुनकर दुखी होते.
पर इससे पहले वो उसके बारे में सोचते उन्हें एक अजीब आवाज़, कुछ कहते हुए सुनाई दी.

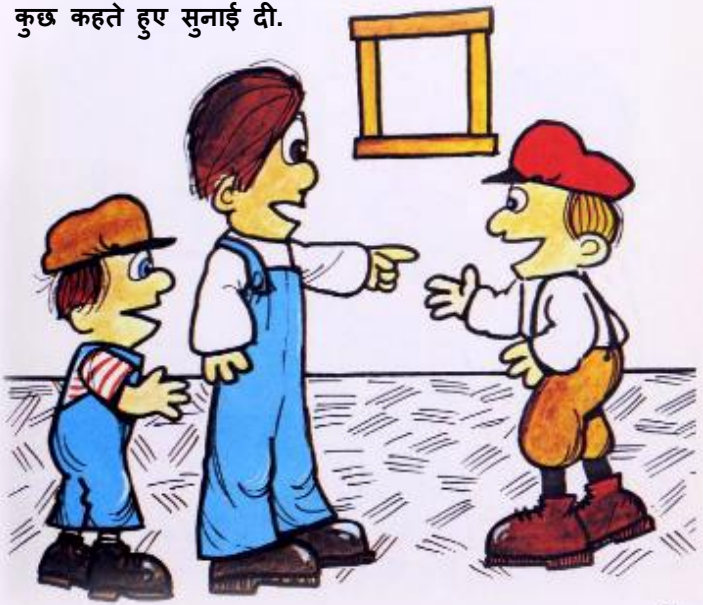

राईट भाईयों ने इधर-उधर देखा. उन्हें खिड़की में एक चमकीली आँखों वाली चिड़िया बैठी दिखाई दी. फिर उन्होंने नाटक किया जैसे चिड़िया उनसे बातें कर रही हो.

"मैं तुम्हारे गंवारू दोस्त की बात की ज्यादा परवाह नहीं करूंगी," चिड़िया ने उनसे कहा. "कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो हवा में काफी देर तक उड़ सकती हैं. मुझे ही देखो. मैं इस खिलौने की तुलना में हवा में बहुत देर तक उड़ सकती हूँ. तुम चाहो को ज़रूर एक उड़ने वाली मशीन बना सकते हो. तुम उसे एक बड़ी चिड़िया जैसे बना सकते हो. उसमें मैं तुम्हारी ज़रूर मदद करूंगी. मैं तुम्हारी सबसे अच्छी दोस्त बनूंगी."

ओरिविल और विल्बर को यह अच्छी तरह पता था कि वो एक काल्पनिक चिड़िया से बातें कर रहे थे. दरअसल वे दोनों खुद एक-दूसरे से बातें कर रहे थे. पर उस लाल चिड़िया से दोस्ती करना उन्हें बहुत अच्छा लगा.

“ज़रा मुझे ध्यान से देखो,” चिड़िया ने चहचहाते हुए कहा. “देखो मैं ऊपर उड़ सकती हूँ. नीचे उड़ सकती हूँ. एक अच्छी उड़ने वाली मशीन को वो सब करना चाहिए जो मैं करती हूँ.”

“पर बहुत से लोगों ने चिड़ियों जैसी मशीने बनाने की कोशिश की है,” ओरिविल ने कहा. “वो मशीनें अच्छा काम नहीं करती हैं.”

“और साथ में,” विल्बर ने जोड़ा, “हमें तो मशीनों के बारे में कुछ भी नहीं आता है. हमें यह भी नहीं पता कि हम कहाँ से शुरू करें?”

“चीज़ें एकदम शुरु से सीखो,” चिड़िया ने समझदारी की सलाह दी. “कहाँ से शुरू करो? पहले सरल मशीनों के बारे में सीखो और समझो.”

“हम वैसा ही करेंगे!” दोनों राईट भाईयों ने कहा. फिर दोनों अपने पिताजी के पास गए. उनके पिताजी एक अखबार छापते थे.

"पिताजी," विल्बर ने कहा, "जब आपकी प्रिंटिंग मशीन बिगड़ जाए तो क्या हम उस मशीन की मरम्मत करने में आपकी मदद कर सकते हैं? हम दोनों मशीनों के बारे में सीखना चाहते हैं."

"उससे मुझे काफी मदद मिलेगी," मिस्टर राईट ने कहा. "पर उसके लिए तुम्हें काफी धीरज और सब्र रखना पड़ेगा."

"धीरज और सब्र का क्या मतलब होता है," दोनों भाईयों ने पिताजी से पूछा. उनके पिताजी ने समझाया, "धीरज और धैर्य का मतलब होता है बड़े सब्र से काम करना. क्यूंकि कभी-कभी समस्या को समझने में बहुत समय लगता है."

"पर हमें धीरज और धैर्य क्यों चाहिए?"

"जब मशीनें खराब होती हैं, तो समस्या को समझने में कई बार बहुत समय लगता है," मिस्टर राईट ने कहा. "कई बार मशीन को दुरुस्त करना बहुत मुश्किल होता है. अगर तुममें सब्र होगा तो तुम समस्या से जूझते रहोगे और उसे छोड़कर नहीं भागोगे. तभी तुम मशीन की मरम्मत कर पाओगे."

"अपने पिता की बात सुनो," लाल चिड़िया ने कहा. "वो बड़े समझदार आदमी हैं."

फिर एक दिन छापेखाने की मशीन वाकई में बिगड़ गई. ओरिविल और विल्बर ने उसकी मरम्मत करने की कोशिश की. उन्होंने बड़ी कोशिश की. पहले वो उसे दुरुस्त करने में सफल नहीं हुए.

"काफी कठिन काम है!" ओरिविल ने कहा.

"सच में बहुत मुश्किल काम है," विल्बर ने अपनी सहमति जताई.

"काम वाकई में कठिन है," मिस्टर राईट ने कहा. "दुनिया में कई चीज़ों को हासिल करना बहुत कठिन होता है. तुम लोग धीरज रखो. परेशान मत हो. भरसक मेहनत करो. तब तुम कुछ भी हासिल कर पाओगे."

"ठीक है, हम अपनी कोशिश ज़ारी रखेंगे," ओरिविल ने कहा.

"हम बिल्कुल भी परेशान नहीं होंगे," विल्बर ने वादा किया.

फिर वो दिल लगाकर काम करते रहे. अंत में वो प्रिंटिंग प्रेस की मशीन को दुरुस्त कर पाए.

"तुमने बहुत अच्छा काम किया!" पिताजी ने अंत में कहा.

जैसे-जैसे वे बड़े हुए राईट भाईयों ने, अलग-अलग तरह की मशीनों के बारे में सीखा. फिर बड़े होने के बाद दोनों ने एक साइकिल की दुकान खोली. वे साइकिलें बनाते थे और उनकी मरम्मत भी करते थे.

एक दिन वो बातूनी लाल चिड़िया फिर उनसे मिलने के लिए आई.

"देखो अब तुम दोनों मशीनों के बारे में काफी कुछ जानते हो," चिड़िया ने उनसे कहा. "बताओ कि तुम उड़ने वाली मशीन कब बनाओगे?"

"अब हम लोग उस मशीन पर काम करने के लिए तैयार हैं," राईट भाईयों ने कहा. "हमने उड़ने वाली मशीन बनाने की एक योजना भी बनाई है. हम उसे एक ऐसे आदमी को दिखायेंगे जो उड़ने वाली मशीनों के बारे में हमसे भी ज्यादा जानता है. फिर हम देखेंगे कि वो हमारी योजना के बारे में क्या सोचता है."

पर तुम्हें पता है कि उड़ने वाली मशीनों के जानकार ने राईट भाईयों की योजना के बारे में क्या कहा?

हवा में उड़ने वाली मशीन

"तुम्हारी मशीन कभी नहीं उड़ेगी!"

उस विशेषज्ञ ने कहा, "तुम्हारी मशीन कभी नहीं उड़ेगी!"

"उसे ख़ाक पता है," छोटी लाल चिड़िया ने कहा.

“धीरज रखो और शांति से काम लो,” छोटी चिड़िया ने गाना गया. “उदास मत हो. नया आईडिया अक्सर लोगों की समझ में नहीं आता है. और उड़ने वाली मशीन एक बिल्कुल नायाब आईडिया है.”

“हो सकता है उस आदमी की बात ठीक हो. जिस तरह से तुमने पंख के चित्र बनाए हैं, उसमें ज़रूर कोई गल्ती है. वो मेरे पंखों जैसे बिल्कुल नहीं हैं.”

“तुम्हारा बहुत शुक्रिया, नन्हीं चिड़िया. हम अपनी कोशिश ज़ारी रखेंगे,” ओरिविल ने कहा.

“अगर हमने पंख का चित्र बनाने में कोई गल्ती की है, तो उन्हें ठीक करने में तुम हमारी मदद ज़रूर करना,” विल्बर ने कहा.

“तुम्हारी मदद करने में मुझे बहुत ख़ुशी होगी,” चिड़िया ने कहा.

फिर चिड़िया के पंखों वाले अन्य मित्र उसके आसपास जमा हुए. जब उन्होंने राईट भाईयों को पक्षियों के पंखों का अध्ययन करते हुए देखा तो उन्हें बड़ी ख़ुशी हुई.

"जब मैं उड़ती हूँ," एक चिड़िया ने कहा, "तो मेरे पंखों के ऊपर वाले हिस्से में एक कम दबाव का क्षेत्र बनता है. इससे नीचे से ऊंचे दबाव की हवा "उछाल" प्रदान करती है."

"मैं अपने पंखों को थोड़ा सा मरोड़ती हूँ और उससे मैं बाएं या दाएं मुड़ पाती हूँ. "ज़रा इसे देखो," राईट भाईयों में से एक ने कहा और फिर उसने जूते के गत्ते के डिब्बे को मरोड़ा. "आप उसकी ऊपरी और निचली सतह को कुछ हिलता हुआ देखेंगे. हमारी उड़ने वाली मशीन के पंख भी हिलने चाहिए – बिल्कुल इसी तरह."

"चलो हम इसके बारे में कुछ और अध्ययन करते हैं," दोनों भाईयों ने कहा.

"और चिड़ियों की उड़ान को बारीकी से देखते रहना," छोटी चिड़िया ने कहा.

उसके बाद राईट भाईयों ने खूब जमकर अध्ययन किया. चिड़ियों और ग्लाइडर के बारे में जो भी जानकारी उपलब्ध थी वो उन्होंने पढ़ी. ग्लाइडर, उस छोटे खिलौने जैसा था जिसे उनके पिता ने उन्हें बचपन में भेंट किया था. ग्लाइडर में कोई मोटर या इंजन नहीं होता था और वो हवा में सिर्फ कुछ ही देर तक ही उड़ सकते थे. फिर वे उड़ते हुए ज़मीन से आकर टकराते थे.

राईट भाईयों ने ओटो लिलिएन्थाल के बारे में पढ़ा. वो जर्मनी में ग्लाइडर बनाता था. पर ओटो भी उन सभी परेशानियों से जूझ रहा था जिनसे बाकी लोग मशक्कत कर रहे थे. उसके ग्लाइडर हवा में ज्यादा देर नहीं उड़ते थे. वो भी काफी जल्दी ही ज़मीन पर आ जाते थे.

ओटो लिलिएन्थाल

“हम लोग खुद ग्लाइडर क्यों न बनाए?” विल्बर राईट ने सुझाव दिया.

“अगर हमने खूब सोच-समझकर और समय लगाकर अपना ग्लाइडर बनाया तो हो सकता है वो हवा में बहुत देर तक उड़े,” ओरिविल ने कहा.

उसके बाद दोनों राईट भाई बड़ी तसल्ली से अपना ग्लाइडर बनाने में जुट गए. उन्हें बिना जल्दबाजी के बहुत सोच समझकर काम किया.

“मुझे उम्मीद है कि यह उड़ेगा,” विल्बर ने कहा.

“हो सकता है,” छोटी चिड़िया ने कहा. “इसके पंख बहुत अच्छे लगते हैं, पर अगर वो न उड़े तो ज्यादा परेशान मत होना. याद रखना, तुम लोग पक्षी नहीं हो और इंसान गलतियाँ कर सकते हैं. इसलिए तसल्ली और धीरज से काम लेना.”

पर राईट भाईयों को इस बात का अच्छा आभास था – कि सही हवाई जहाज़ बनाने में उन्हें काफी वक़्त लगेगा. सफलता मिलने से पहले उन्हें काफी इंतज़ार करना पड़ेगा.”

फिर राईट भाई अपने ग्लाइडर को किटी-हॉक नाम की जगह पर ले गए. ग्लाइडर परीक्षण के लिए वो अच्छी जगह थी.

अगर ग्लाइडर काम न करे तो वहां ग्लाइडर के ज़मीन पर उतरने के लिए बहुत मुलायम और अच्छी रेत थी.

उसके बाद वो ग्लाइडर को लादकर एक छोटी पहाड़ी के ऊपर ले गए. फिर उनमें से एक भाई ग्लाइडर में बैठा और दूसरे ने ग्लाइडर को पहाड़ी से नीचे धकेला.

“यह वाकई में उड़ता है,” दोनों भाई चिल्लाए.

फिर पिता वाले खिलौने जैसे उनका ग्लाइडर ज़मीन पर आकर टकराया. उनका ग्लाइडर उड़ा - पर देर तक हवा में नहीं टिका पाया.

उनका ग्लाइडर हवा में बहुत देर तक क्यों नहीं उड़ पाया? क्या तुम्हें पता है क्यों?

इस सवाल का जवाब राईट भाईयों को भी नहीं पता था. नन्ही लाल चिड़िया को भी इसका उत्तर नहीं मालूम था. “हाँ, एक बात मैं जानती हूँ,” चिड़िया ने कहा. “यह सवाल मुझे भी बहुत परेशान कर रहा है.”

“तुम्हें इसके लिए परेशान होने की कोई ज़रुरत नहीं है. पिताजी की सीख हमें याद है. “जीवन में बहुत सी चीज़ें कठिन होती हैं. पर अगर हम प्रयोग करते रहें और हार न मानें तो हम एक दिन ज़रूर सफल होंगे.”

“हमें पंखों के नीचे के दाब को ज्यादा शक्तिशाली बनाने के लिए कुछ ज़रूर करना होगा,” उनमें से एक भाई ने कहा. “उससे ग्लाइडर आसमान में उठेगा और फिर उड़ता रहेगा.”

“क्या तुम अपने ग्लाइडर में एक इंजन फिट कर सकते हो?” चिड़िया ने पूछा. “क्या उससे तुम्हारा काम बन जायेगा?”

“इंजन लगाने से और ज्यादा हवा, हवाई-जहाज़ के पंख के नीचे से गुजरेगी. उससे शायद हवाई-जहाज़ काफी देर तक हवा में उड़े,” एक भाई ने कहा. “शायद इंजन लगाने से हमारा काम बन जाए.”

उसके बाद राईट भाईयों ने कुछ और अध्ययन किया. फिर उन्होंने ज़ोर-शोर से नए जहाज़ को बनाने की दुबारा तैयारी की. उन्होंने इंजन बनाने वाले लोगों को पत्र लिखे.

"हम लोग एक इंजन खरीदना चाहते हैं," उन्होंने लिखा. "हम लोग इस इंजन को ग्लाइडर में फिट करके एक हवाई-जहाज़ बनाना चाहते हैं. हवाई-जहाज़, दरअसल इंजन वाला ग्लाइडर ही होता है."

क्या तुम्हें पता है उसका
क्या नतीजा निकला?

कुछ इंजन कंपनियों ने उनके पत्र का जवाब दिया. कोई भी इंजन निर्माता, राईट भाईयों को अपना इंजन बेंचना नहीं चाहता था.

"हम नहीं चाहते कि हमारा इंजन इतनी बकवास चीज़ के लिए इस्तेमाल हो," एक निर्माता ने लिखा. "अगर लोगों को उड़ना ही था, तो भगवान ने उन्हें पंखों से साथ पैदा किया होता!"

फिर राईट भाईयों ने क्या किया?
क्या तुम अनुमान लगा सकते हो?

दोनों भाईयों ने अपने दिमाग और हाथों का इस्तेमाल करके खुद अपना इंजन बनाया.

इंजन बनाना कोई आसान काम नहीं था. इसमें उन्हें बहुत वक़्त लगा. पर उससे वो बिल्कुल परेशान नहीं हुए. उन्हें यह भी पता था कि हवाई जहाज़ की उड़ान को लेकर हर चीज़ में बहुत समय लगेगा.

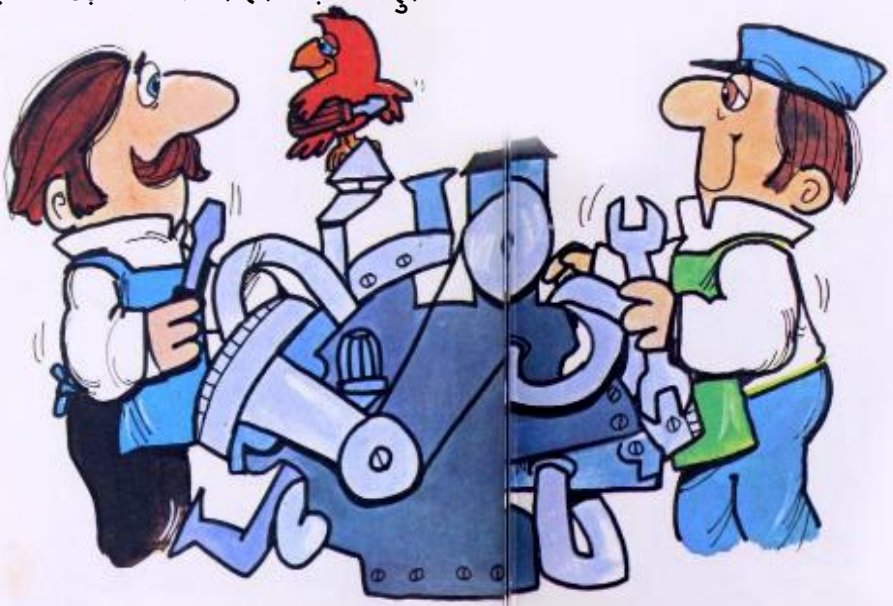

"चलो इंजन ख़त्म हुआ!" अंत में पहले भाई ने कहा.

"मुझे पूरी उम्मीद है कि हमारा इंजन अच्छा काम करेगा," दूसरे भाई ने कहा.

पर क्या उनका इंजन चला? तुम क्या सोचते हो?

ज़रा उस प्रोपेलर को देखो. प्रोपेलर घूम ही नहीं रहा है. फिर भला इंजन कैसे शुरू होगा.

"मुझे इंजन के बारे में कुछ भी नहीं पता," छोटी लाल चिड़िया ने कहा. "मुझे बस इतना पता है कि मैं एक-दो हफ्ते में ही उड़ना सीख गई थी. और तुम लोगों को उड़ने में सालों लग रहे हैं!"

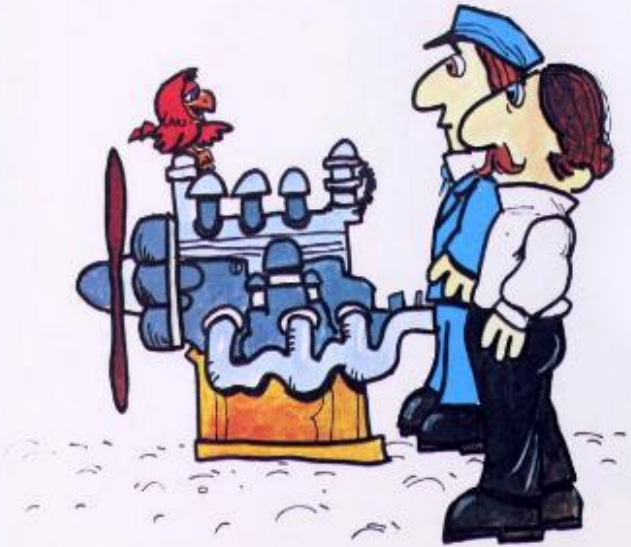

"ठीक है. हम सब्र और धीरज से काम लेंगे!" ओरिविल ने कहा.

"हम लोग हताश नहीं होंगे, और न ही हार मानेंगे," विल्बर ने कहा. "हम अंत तक अपना प्रयास ज़ारी रखेंगे."

उन्होंने सतत कोशिश ज़ारी रखी. उन्होंने अपने इंजन में और सुधार किया. फिर अंत में सब कुछ तैयार हुआ.

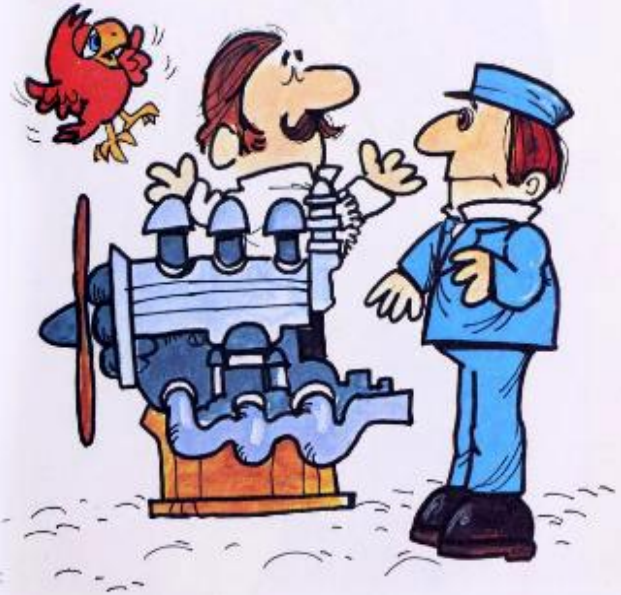

उनका इंजन शुरू हुआ. उसमें खड़-खड़ की आवाज़ हुई. उसके बाद प्रोपेलर तेज़ी से घूमने लगा. “वाह! क्या खूब!” छोटी चिड़िया चहचहाई.

“हमारा इंजन काम कर रहा है!” दोनों भाई चिल्लाए.

“अब हमारे पास एक अच्छा इंजन है,” भाईयों ने कहा. “अब हम इंजन को ग्लाइडर में फिट करेंगे. तब शायद हमारे पास एक असली हवाई-जहाज़ होगा – एक ऐसा हवाई-जहाज़ जो हवा में देर तक उड़ पाएगा. क्या उससे वो सच में हवाई-जहाज़ बना पाए?

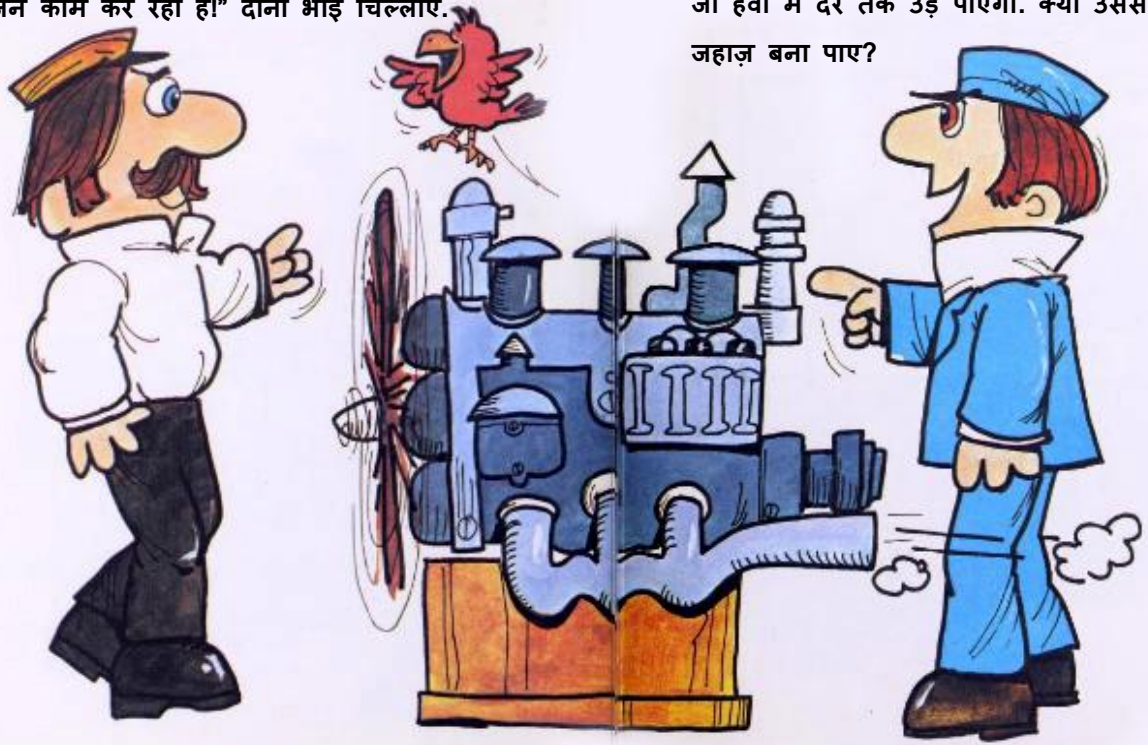

नहीं. वो उसमें सफल नहीं हुए.

अब उनके पास एक अच्छा चलने वाला इंजन था. उन्होंने उस इंजन को ग्लाइडर में फिट किया. पर ग्लाइडर बिल्कुल नहीं उड़ा. क्योंकि उनका इंजन बहुत भारी था!

“अब हम क्या करें,” दोनों राईट भाईयों ने आपस में सोचा.

“क्या तुम हार मानकर हवाई-जहाज़ बनाना छोड़ दोगे?” नन्ही चिड़िया ने पूछा. चिड़िया काफी चिंतित थी.

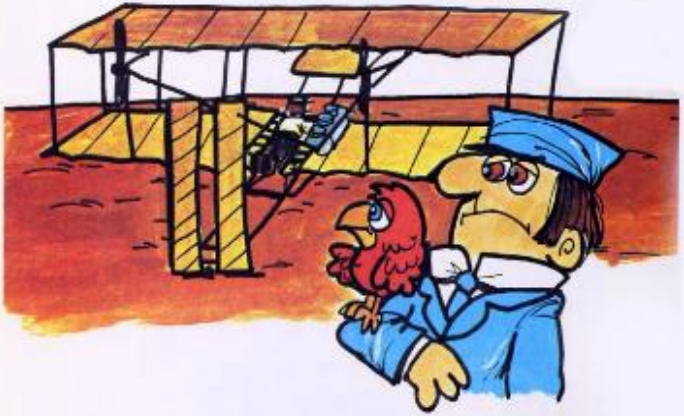

“नहीं, हम उसपर कुछ और काम करेंगे,” उनमें से एक भाई ने कहा.

फिर उन्होंने अपने हवाई-जहाज़ के डिजाईन को दुबारा गौर से देखा. उन्होंने अपने डिजाईन में परिवर्तन किया. उन्होंने ग्लाइडर और इंजन दोनों में बदलाव किया.

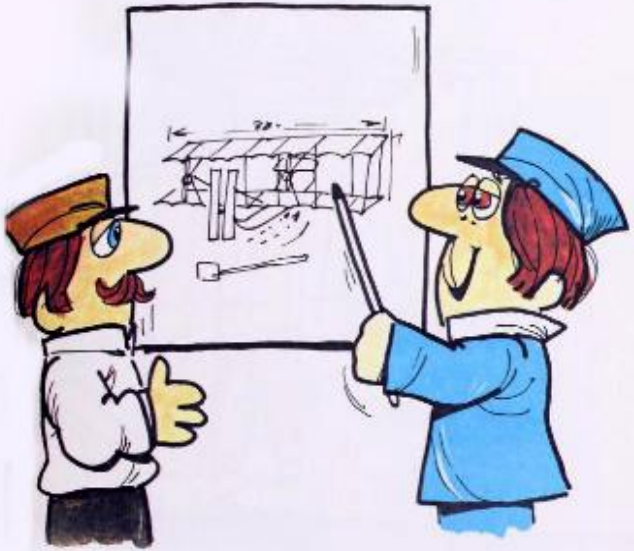

फिर एक दिन किटी-हॉक में एक आश्चर्यजनक बात घटी.
राईट भाईयों का ग्लाइडर, इंजन के साथ ज़मीन से हवा में उड़ा.

"वो उड़ रहा है! वो उड़ रहा है!" ओरिविल ख़ुशी से चिल्लाया.
उसके हाथ में हवाई जहाज़ का स्टीयरिंग था.

"वो एक बड़ी चिड़िया जैसा है!"

वो चिड़ियों जैसे आराम से तो नहीं उड़ा.
पर इंसान के लम्बे इतिहास में वो पहला मौका था जब कोई हवाई जहाज़ ज़मीन से उड़ा था.

उस हवाई-जहाज़ को अच्छी तरह से उड़ाने में राईट भाईयों को और कुछ समय लगा. पर अंत में जब वे सफल हुए तो राईट भाई बेहद खुश थे. उन्हें अपने सब्र का फल मिला था.

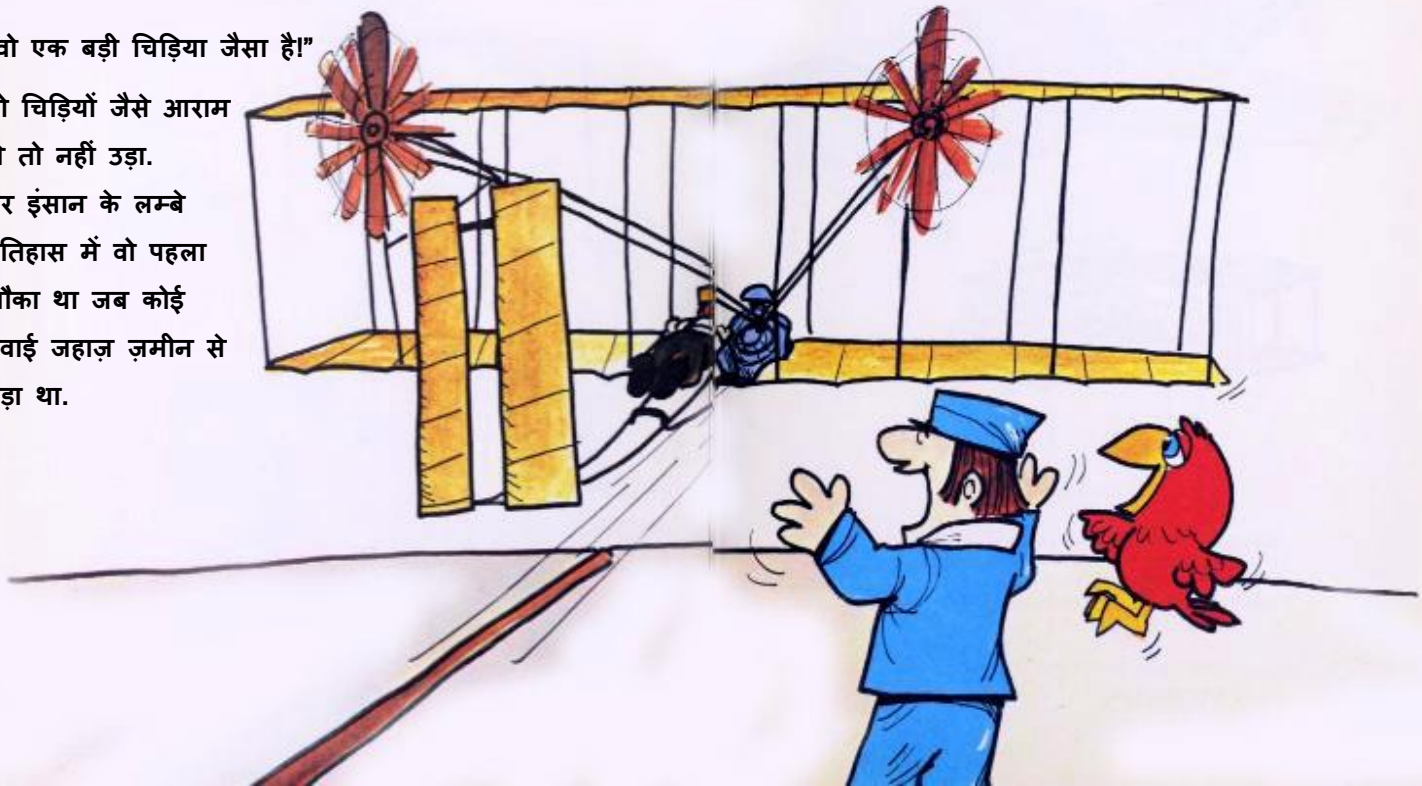

अब जब तुम आसमान में नए-नए हवाई जहाज देखते हो, तो तुम्हें अच्छा अंदाज़ होगा कि पहले हवाई-जहाज को उड़ने में कितना समय लगा होगा. अगर तुम अपने जीवन में सब्र और धीरज से काम करोगे तो तुम उसका परिणाम भी देख पाओगे.

हाँ, तुम अब हवाई-जहाज का अविष्कार तो नहीं कर सकते हो. उसका इजाद तो पहले ही हो चुका है. इसलिए तुम शायद किसी नई चीज़ का अविष्कार करना चाहो! पर उसके लिए तुम्हें बहुत धीरज और लगन की ज़रुरत होगी.

तब तुम्हें अपने अविष्कार पर काम करने में बहुत मज़ा आएगा बिल्कुल जैसे राईट भाईयों को हवाई जहाज के निर्माण में आनंद आया.

धैर्य से राईट भाई अपने मुहिम में सफल हुए

राईट भाई की पहली उड़ान

ऐतिहासिक तथ्य

विल्बर राईट का जन्म 1867 में और उसके भाई ओरिविल का जन्म 1871 में हुआ. उन्होंने अपने जीवनकाल में "उड़ान" को लेकर सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया.

उन्होंने 1899 में अपना पहला ग्लाइडर बनाया और 1900 में उसे किटी-हॉक, नार्थ कैरोलिना, अमरीका में पहली बार उड़ाया. शुरू में उन्होंने 12-हॉर्सपावर का एक पेट्रोल इंजन इस्तेमाल किया. उसमें दो प्रोपेलर थे. हवा से भारी पहले हवाई जहाज़ की सफल उड़ान उन्होंने दिसम्बर 17, 1903 को किटी-हॉक में की. उस नज़ारे को चार आदमियों ने और एक लड़के ने देखा. जिस दिन उन्होंने उड़ान भरी उस दिन विल्बर 36 साल का था और उसका भाई ओरिविल 31 साल का. उनकी पहली सफल उड़ान सिर्फ 59 सेकंड की थी. उस साल राईट भाईयों ने क्रिसमस का त्यौहार बड़े जश्न के साथ मनाया.

सब्र और धीरज के फल से राईट भाई काफी पहले से परिचित थे. अनुभव के आधार पर उन्हें अपने डिजाईन में कई बार बदलाव करने पड़े. उन्हें रेतीले मैदानों और खेतों में उड़ान को लेकर काफी प्रयोग करने पड़े. उन्होंने एक विंड-टनल का भी निर्माण किया. उसमें वो यह देखते थे कि हवा के बदलाव का उनके ग्लाइडर और हवाई जहाज़ पर क्या फर्क पड़ेगा. उनका विंड-टनल काफी जुगाड़ू था – वो एक गत्ते का बड़ा डिब्बा था जिसके एक सिरे पर एक हवा का छोटा पंखा लगा था. इस विंड-टनल में वो कागज़ के पंखों के साथ प्रयोग करते थे और हवा के वेग का उनपर प्रभाव देखते थे.